आधुनिक भारतीय चित्रकला

अध्याय–5
कम्पनी शैली एवं राजा रवि वर्मा

कम्पनी शैली का उद्‌भव एवं विकास :–

ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने मूलतः व्यापार के उद्‌देश्य से भारत में प्रवेश किया था, किन्तु धीरे–धीरे सत्ता में हस्तक्षेप करना प्रारम्भ कर पूरे देश पर शासन स्थापित कर लिया, इसके पास अपने प्रशासनिक अधिकारी, चित्रकार, सैनिक और नौकर आदि सभी थे, ये सभी कम्पनी के कर्मचारी कहे जाते थे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत में शिक्षा के क्षेत्र में अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली को लागू किया, लार्ड मैकाले ने 1834 में अंग्रेजी शिक्षा पद्धति लागू की, इस समय चित्रकला के क्षेत्र में भी काफी कार्य हुआ, शिक्षा संस्थाओं में यूरोपीय कला पद्धति में शिक्षा दी जाने लगी, साथ ही फोटोग्राफी की नयी तकनीक ने भी कला को प्रभावित किया, यूरोपीय शैली में मॉडल बैठाकर अभ्यास कराया जाने लगा। मद्रास (1850), कलकत्ता (1854), बम्बई (1857), लाहौर (1857) आदि स्थानों पर कला विद्यालय खोले गये।

यूरोपीय शैली में हजारों की संख्या में ड्राईंग, जल रंग, तैल चित्र और प्रिन्ट बनाये गये, उनके बनाने वालों में अंग्रेज, चित्रकार, डॉक्टर, सैनिक अधिकारी, सर्वेक्षण अधिकारी, पर्यटक तथा उनसे प्रभावित देशी चित्रकार थे, पटना, कलकत्ता, मुर्शिदाबाद, अवध और मद्रास आदि स्थानों पर चित्रकर्म होता रहा, अन्य जगहों पर भी चित्र बनते रहे, आज ये चित्र कलकत्ता के विक्टोरिया मेमोरियल, आशुतोष कलेक्शन, नेशनल लाइब्रेरी, बिड़ला अकादमी ऑफ आर्ट, इण्डियन म्यूजियम, दिल्ली के नेशनल गैलरी ऑफ मार्डन आर्ट एवं नेशनल म्यूजियम, आदि में संग्रहीत हैं।

भारत के अतिरिक्त विदेशों में इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी एण्ड रिकॉर्डस, ब्रिटिश लाइब्रेरी लंदन, विक्टोरिया एण्ड अलबर्ट म्यूजियम लंदन, के संग्रहों में भी चित्र हजारों की संख्या में हैं। संग्राहलयों में प्रदर्शित चित्रों में तेल चित्र, लघुचित्र, जल रंग और प्रिन्ट चित्र (एचिंग और लिथोग्राफ) एवं अभ्रक पर बनाये गये चित्र (माईका पेंटिंग) भी हैं।

दृश्यचित्र :– कम्पनी शैली के चित्रकारों ने भारतीय जीवन के विभिन्न विषयों को चित्रित किया। उन्होंने बड़ी संख्या में दृश्यचित्र बनाये। देश के विभिन्न स्थानों का भ्रमण करते हुए पर्वत, नदी, जंगल तथा समुद्र आदि के दृश्यों का चित्रण किया। इस सन्दर्भ में प्रकृति के दृश्यों को ड्राइंग, जलरंग, एन्ग्रेविंग और लिथोग्राफ आदि विभिन्न माध्यमों से चित्रित करने वाले प्रमुख चित्रकारों में थामस डेनियल (1770–1840) विलियम डेनियल (1770–1837), विलियम होजेज और विलियम सिमसम आदि थे। डेनियल ने गंगा नदी से अपनी यात्रा करते हुए बिहार और उत्तर प्रदेश का दौरा किया और इसी बीच गया, मुंगेर, हजारी बाग, जौनपुर और गाजीपुर आदि स्थानों के दृश्यचित्र बनाये। विलियम डेनियल ने 1785 से 1794 के बीच भारत की यात्राएँ कीं। वे स्टील एन्ग्रेविंग में पारंगत थे। उन्होंने 144 चित्रों की एक सीरीज भी बनायी थी। इंग्लैण्ड लौटने पर उन्होंने अपने इन चित्रों की शृंखला को पुस्तक रूप में प्रकाशित किया।

विभिन्न प्रदेशों के लोक जीवन का चित्रण –

उस समय भारत आने वाले अंग्रेजों में यहाँ के रंगों से भरी जीवन शैली, पोशाक, आभूषण, उत्सव और त्यौहार आदि के प्रति जिज्ञासा के साथ ही विशेष आकर्षण था। भारत के विशाल भू–भाग के विभिन्न प्रदेशों में रहने वाले लोगों की जिन्दगी की विविधता ने चित्रकारों को प्रभावित किया। इस विषय पर चित्र

चित्र संख्या–1 जुलूस

बनाने वाले महत्वपूर्ण चित्रकारों में एमिली ईडेन, बाल्थाजार सोलमिन्स (1960–1824) और चार्ल्स डी ओली (1781–1845) आदि प्रमुख हैं। स्थानीय चित्रकारों में मनुलाल, रामदास, सीताराम, भवानीदास और शेखजियाउद्दीन आदि प्रमुख थे। इन सभी ने विविध उत्सवों, जुलूस, शोभायात्राओं मेलों आदि के चित्रों की रचना की। अंग्रेज चित्रकारों तथा भारतीय चित्रकारों के चित्रों में अधिक अन्तर नहीं होता था। चित्र संख्या–1 (जुलूस का चित्र)

पुरातात्विक महत्व के स्थलों का चित्रण – बहुत से अंग्रेज चित्रकारों ने भारत के पुरातात्विक स्थलों का भ्रमण किया और ऐतिहासिक महत्व के चित्र बनायें, उनमें अजन्ता, ऐलोरा, एलिफेन्टा, कन्हेरी की गुफाएँ, ताजमहल, लाल किला फतेहपुर सीकरी और कुतुबमीनार आदि प्रमुख पुरातात्विक स्थलों के चित्र महत्वपूर्ण है। उन चित्रकारों में जेम्स फरग्यूसन, रार्बट मेलविले, कर्नल रॉबर्ट स्मिथ (भरतपुर जिले के जुलूस का दृश्य) थॉमस डेनियल और विलियम डेनियल आदि प्रमुख थे। इन का माध्यम ड्रॉइंग, जलरंग, तैल रंग, एनग्रेविंग तथा लिथोग्राफ आदि था। पुरातात्विक स्थलों के ये चित्र काफी महत्वपूर्ण हैं।

वेशभूषा एवं आभूषण– भारत के विविध प्रान्तों के निवासियों की विविधता से भरी जीवन शैली और भिन्न–भिन्न रंगों की पोशाकों व आभूषणों से सुसज्जित स्त्री–पुरूषों, बच्चों और बूढ़ों आदि को यूरोपियन चित्रकारों ने अपने चित्रों में प्रस्तुत किया था। छोटे आकार के ये चित्र ड्रॉइंग, जल रंग, एन्ग्रेविंग तथा

चित्र संख्या–2 सपेरा–सपेरन

लिथोग्राफ जैसे माध्यम में हैं। इन विषयों पर चित्र बनाने वाले चित्रकारों में बाल्थाजार सोलमिन्स, मादाम बेलनोस, चार्ल्स डी ओली ऐमिली ईडेन और विलियम सिमसिम आदि प्रमुख थे। उनसे प्रभावित स्थानीय चित्रकारों में फकीर चन्द, शिवलाल और राजाराम आदि थे।

विभिन्न व्यवसायों से सम्बन्धित चित्र –

कम्पनी के समय के चित्रकारों ने किसान, लौहार, बुनकर, सुनार, नौकर, दरबान, रसोइया, मिठाईवाला, फेरीवाला और मदारी आदि विभिन्न व्यवसायों से जुड़े हुए लोगों का चित्रांकन किया। इन चित्रों को बनाने वाले प्रमुख चित्रकारों में बाल्थाजार सोलाभिन्स, एमिली ईडेन, मादाम बेलनोस और चार्ल्स डी ओली आदि प्रमुख थे। स्थानीय चित्रकारों ने भी इस तरह के चित्र बनाये। ड्राईंग, जलरंग, एन्ग्रेविंग और लिथोग्राफ के रूप में इन्हें बनाया गया। चित्र संख्या–2 (सपेरा–सपेरन)

आवक्ष चित्र एवं व्यक्ति चित्र :– कम्पनी शैली में बहुत अधिक संख्या में राजा, नवाब, कम्पनी के शासक, अधिकारी तथा अन्य महत्वपूर्ण लोगों के आवक्षचित्र एवं व्यक्तिचित्र भी बनाये गये। उन चित्रों में इन लोगों को भव्य पोशाक पहने हुए विशेष मुद्रा में दिखाया गया है। इसका माध्यम जलरंग, तैल रंग तथा ग्वॉश था। चित्रकार जान जोफानी, जेम्स हन्टर तथा

टिल्ली केटल आदि ने अंग्रेज शासक, अधिकारी तथा राजाओं और नवाबों आदि के व्यक्ति चित्र बनाए।

वनस्पति का चित्रण – कम्पनी शैली में काफी संख्या में वनस्पतियों का चित्रण भी हुआ। हजारों की संख्या में पेड़–पौधे, लता और फूल–फल आदि का चित्रांकन हुआ। जल रंग, एन्गेविंग तथा लिथोग्राफ विधाओं में इन चित्रों को बनाया गया। छोटे आकार के इन चित्रों को विभिन्न शोध–पत्रिकाओं तथा वनस्पति सर्वेक्षण–संग्रहों के लिए बनाया जाता था। वनस्पतियों के चित्र बनाने वाले चित्रकारों में वाल्टर हुड फिच, जोसेफ डाल्टन हुकर, जॉन फरग्यूसन, लेडी कैनिंग, डब्लू. जे. हुकर और एमिली इडेन आदि के नाम प्रमुख है। स्थानीय चित्रकारों में गोराचंद, गोविन्द, विष्णुप्रसाद, भवानीदास तथा रामदास आदि थे।

पशु, पक्षी तथा कीट–पतंगों के चित्र – भारत के रंगीन पक्षी कीट–पतंग तथा विचित्र जानवरों ने भी उस समय के चित्रकारों को आकर्षित किया था। बड़ी संख्या में चित्रकारों ने इनके चित्र जलरंग, एन्ग्रेविंग और लिथोग्राफ माध्यम में बनाये चित्र आकार में छोटे होते थे। इन चित्रों का निर्माण भी विभिन्न शोध पत्रिकाओं तथा प्राणी सर्वेक्षणों के लिए हुआ था। जेम्स फोरबस, रार्बट होम, फ्रान्सिस बुकानन, जॉन गोल्ड, एलिजाबेथ आदि प्रमुख चित्रकारों ने पशु–पक्षियों, कीट–पतंगों तथा जल में रहने वाले जीवों के चित्र बनाये। इनसे प्रभावित भारतीय चित्रकारों ने भी काफी काम किया था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समय में विभिन्न विषयों पर चित्र बनाये गये। भारत के चित्रकला के इतिहास में उपर्युक्त 150 वर्षों का समय बहुत ही महत्वपूर्ण है। चित्रकला के विभिन्न माध्यमों जलरंग, तेलरंग, माइका पेन्टिंग (अभ्रक पर बनाया चित्र) एन्ग्रेविंग और लिथोग्राफ आदि का विकास एक साथ हुआ। दृश्यचित्रण में स्थल अंकन, मानवाकृति, व्यक्तिचित्रण व अनुकृति बनाना इस समय की चित्र कला की प्रमुख विशेषता रही। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत के प्राकृतिक, पुरातात्विक दृश्य, लोगों की जीवन शैली, पोशाक, पेशा, उत्सव, त्यौहार, पशु–पक्षी और वनस्पती के चित्र पोट्रेट तथा पोट्रेचर अंग्रेज चित्रकारों के द्वारा उनकी अपनी शैली में बनाये गये। उनके द्वारा बनाये गये चित्र इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि आज इन प्राकृतिक पुरातात्विक महत्व के स्थानों का दृश्य पहले जैसे नहीं रहा। लोगों की पोशाक और जीवन शैली में भी पर्याप्त परिवर्तन हो गया है।

राजा रवि वर्मा

राजा रवि वर्मा का जन्म 1848 ई. में केरल के एक गाँव किलिमन्नूर में हुआ। रवि वर्मा को बाल्यकाल से ही कला में विशेष रूचि थी। इसकी प्रेरणा उन्हें अपने चाचा से प्राप्त हुई। इन्होंने थियोडोर जेनसन व अन्य यूरोपीय कलाकारो से जो दक्षिण भारत घूमने आते थे, कला दीक्षा ली। उन्होंने अपने समसामयिक कलाकार अलेग्री नायडू से भी चित्रकला की शिक्षा ली। उस समय तैल चित्रण में नायडू का नाम बहुत प्रसिद्ध था। उन्हें उस समय यूरोपियन पद्धति का भारत में सर्वश्रेष्ठ चित्रकार माना जाता था। रवि वर्मा ने यूरोपियन स्टूडियोज की शैली को अपनाते हुए भारतीय विषयों, भारतीय चित्रकला के आदर्शों, विशेषताओं व अभिव्यक्ति की कल्पनात्मक प्रणालियों का आधार लिया।

राजा रवि वर्मा को त्रावनकोर के महाराजा, बड़ौदा के गायकवाड़ व अन्य धनी व्यक्तियों का संरक्षण प्राप्त था। रवि

चित्र संख्या–3 राजा रवि वर्मा का एक चित्र

चित्र संख्या–4 रावण और जटायु

वर्मा ने भारतीय गाथाओं की अभिव्यक्ति पश्चातय शैली में की। उन्होंने अनेक विषयों के चित्र बनाए, उनके विषयों में राजा महाराजाओं के पोट्रेट चित्रों की भी अधिकता रही, चित्रों के विषय भारतीय व शैली पाश्चात्य होने से उनमें नाटकीयता का भी भाव मिलता है। उनके चित्रों का तत्कालीन रंगमंच एवं नाटकों से बहुत सम्बन्ध था। राजा रवि वर्मा ने प्राचीन पौराणिक विषयों के लिए वेशभूषाओं एवं आभूषणों की खोज की व इस के लिए उत्तर भारत के राम कृष्ण से सम्बन्धित तीर्थ स्थानों पर भी गये किन्तु अधिक सफलता न मिलने पर उन्होंने तत्कालीन लोक जीवन एवं उस समय की नाटक मंडलियों से प्रेरणा ग्रहण की उसी आधार पर देवी देवताओं के पौराणिक स्वरूप को चित्रों में अंकित किया।

राजा रवि वर्मा ने अपने चित्रों के प्रकाशन के लिए बम्बई में लीथोग्राफ प्रेस खोली व उसी के द्वारा राजा रवि वर्मा के चित्र प्रकाशित हुए थे व प्रचलित हुए। उनके चित्रों को भारत में विशेष ख्याति मिली व विदेशों में भी इनकी सराहना हुई। भारतीय धार्मिक विषयों पर आधारित और मुद्रित होने के कारण जनसामान्य में इनके चित्र बहुत लोकप्रिय हुए। रवि वर्मा अपने समय के अत्यंत सफल कलाकारों में से थे। छोटी उम्र में ही उन्हें प्रसिद्धि मिल गई थी। हिन्दू महाकाव्यों तथा आख्यानों के चित्र रवि वर्मा की खास पहचान थे। स्त्रियों के अनगिनत रूप भी रवि वर्मा की कला में मिलते हैं। रवि वर्मा के प्रसिद्ध चित्र रावण और जटायु, भीष्म प्रतिज्ञा, समुद्र का गर्व मर्दन, द्रौपदी, शकुन्तला, राजा हरीशचन्द्र, यशोदा एवं कृष्ण आदि हैं।

रावण और जटायु : रवि वर्मा ने रामायण एवं महाभारत के अनेक प्रसंगों को चित्रित किया है। (चित्र संख्या–4) रावण और जटायु चित्र रवि वर्मा का एक प्रसिद्ध चित्र है। चित्र में सीता का अपहरण कर जाते हुए रावण पर जटायु के आक्रमण पर रावण द्वारा जटायु के पंख को काटने की घटना का अंकन हुआ है। रावण को क्रोधयुक्त मुद्रा, सीता की असहाय अवस्था नाटकीय प्रभाव युक्त है। छाया प्रकाश वस्त्र आभूषण एवं आकृति अंकन में यूरोपीय प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

देवकी एवं वासुदेव की कारागार से मुक्ति– यह चित्र महाभारत की घटना पर आधारित है। चित्र आकृति निरूपण, छाया प्रकाश, परिप्रेक्ष्य की दृष्टि से पाश्चात्य प्रभाव युक्त है एवं इसमें रंगमंच की नाटकीयता भी स्पष्ट दिखाई देती है। चित्र की रंग योजना अत्यन्त आकर्षक है।

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के संरक्षण में विकसित शैली कम्पनी शैली कहलाती है।
2. इसमें यूरोपीय शैली में तैल चित्र, जलरंग चित्र एवं प्रिन्ट चित्र बनाए गये।
3. कम्पनी शैली में भारतीय चित्रकारों के साथ यूरोपीय चित्रकारों ने भी कार्य किया।
4. इस शैली के प्रमुख चित्रकारों में थामस डेनियल, विलियम डेनियल, विलियम होजेज, एमिली इडेन, चार्ल्स डी. ओली, फकीरचन्द, शिवलाल, राजाराम, गोविन्द, विष्णुप्रसाद, भवानीदास आदि प्रमुख थे।
5. पटना, कलकत्ता, मुर्शिदाबाद, अवध, मद्रास, आदि कम्पनी शैली के प्रमुख केन्द्र रहे।
6. कम्पनी शैली में विभिन्न प्रदेशों के लोक जीवन, वेशभूषा व पुरातात्विक स्थानों के साथ वनस्पति और कीटपतंगों आदि के चित्र बने।

अभ्यास प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक

1. कम्पनी शैली किसके संरक्षण में विकसित हुई?
2. कम्पनी शैली का विकास देश के किन भागों में अधिक हुआ?
3. राजा रवि वर्मा किन रंगों का प्रयोग करते थे?
4. रवि वर्मा के दो प्रसिद्ध चित्रों के नाम लिखिए।

लघूत्तरात्मक

1. कम्पनी शैली के प्रमुख विषय क्या रहे?
2. कम्पनी शैली के प्रमुख कलाकारों के बारे में लिखिये?
3. राजा रवि वर्मा के चित्र के प्रमुख विषयों के बारे में लिखिये।
4. राजा रवि वर्मा के कुछ प्रमुख चित्रों का वर्णन करिये।

निबन्धात्मक

1. कम्पनी शैली के उद्‌भव व विकास पर निबन्ध लिखिये।
2. राजा रवि वर्मा का भारतीय कला में क्या योगदान रहा। स्पष्ट कीजिये।